पाठ 4 **जनवरी 20-26**

संसार के तौर-तरीके से बचें

सब्त अपराह्न **जनवरी 20**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : भजन० 119:11; इफि० 6:18; रोम० 8:5-6; इब्रा० 11:1-6; 1राजा 3:14; यहेज० 36:26-27.

याद वचन: *"कोप के दिन धन से तो कुछ लाभ नहीं होता परन्तु धर्म मृत्यु से भी बचाता है... जो अपने धन पर भरोसा रखता है वह गिर जाता है, परन्तु धर्मी लोग नये पत्ते के समान लहलहाते हैं" (नीतिवचन 11:4, 28)।*

यद्यपि शैतान यीशु से असफल हुआ, वह हर किसी के साथ सफल हुआ है। वह ऐसा करना जारी रखेगा जब तक हम परमेश्वर की शक्ति और हथियार से नहीं लड़ते हैं, केवल वह जो हमें संसार के आकर्षण से स्वतंत्रता प्रदान करता है।

इस प्रकार हमारा ध्यान हमारे स्वर्गीय प्रबंधक पर केन्द्रित होना चाहिए। दाऊद ने इस जीवन में सच्ची कीमत को महसूस किया जब उसने लिखा, "जवान सिहों को तो घटी होती और वे भूखे भी रह जाते हैं, परन्तु यहोवा के खोजियों को किसी भली वस्तु की घटी न होगी" (भजन० 34:10)। सुलैमान ने पहचान लिया कि ज्ञान और समझ सोने और चाँदी से भी अधिक मूल्यवान हैं (नीति व० 3:13-14)। सच्ची खुशी और यथार्थ जीवन दौलतों से आँखें फेरने से मिलते हैं, जिसे हम अर्जित करते हैं, और जीवते परमेश्वर की ओर ताकते हैं, जो हमें हासिल करता है।

सांसारिक आकर्षण से बचने की हमारी एकमात्र आशा है यीशु के साथ हमारा जीवंत और सफल संबंध का होना। इस सप्ताह हम उस संबंध के अवयवों का अध्ययन करेंगे, और हमारे स्वयं की आत्मिक सफलता को पहचानने के लिये यह कितना निर्णायक है, संसार के आवरण के पीछे की शक्ति और मसीह की महत्ता को देखने के लिये जो जीने का वास्तविक कारण है।

रविवार **जनवरी 21**

मसीह के साथ एक संबंध

सांसारिक धन (वस्तुओं) का प्रेम, यद्यपि वह अधिक न भी हो, एक सशक्त बंधन है जो मसीह की बजाय संसार के साथ आत्मा को बांधता

- सब्त जनवरी 27 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

है। सांसारिक धन के संबंध में यद्यपि हमारे पास अधिक नहीं है, भौतिक वस्तुओं को प्राप्त करने की भावुक लालसा एक भयंकर अभिशाप बन सकती है जो परमेश्वर के नियंत्रण में यदि न लाया जाये, एक आत्मा को उद्धार से अलग कर सकती है। शैतान इसे जानता है, इसी लिये वह भौतिक सम्पत्तियों के प्रति प्रेम को बहुतों को फँसाने हेतु प्रयुक्त करने का हर संभव प्रयास करता है।

हमारी एकमात्र सुरक्षा क्या है?

"पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ" (कुलु० 3:2)। हम कैसे करें जो पौलुस हमें करने को कहता है? (इसे भी देखें भजन० 119:11, इफि० 6:18)।

_____

_____

दूसरे कौन से पदस्थलों को आप पाते हैं जो इस विषय में बातें करते हैं, हमें हमारे मन में केंद्रित करना चाहिए? (उदाहरणार्थ देखें, फिलि० 4:8)।

_____

_____

किसी भी रूप में यह आये– सांसारिकता के लिये एकमात्र उपचार है, मसीह पर नित्य श्रद्धा जीवन के उतार-चढ़ाव के द्वारा। मूसा ने "मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्र के भण्डार से बड़ा धन समझा, क्योंकि उसकी आँखें फल पाने की ओर लगी थी (इब्रा० 11:26)। किसी अन्य संबंध से पहले, मसीह हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। मसीह दृढ़ विश्वास पर आधारित एक समर्पण की खोज कर रहा है, प्राथमिकता के आधार पर नहीं; अर्थात् हमें मसीह पर समर्पित होना चाहिए क्योंकि वह कौन है और हमारे लिये उसने क्या किया है, किसी तत्कालिक लाभ के लिये नहीं जो उस पर हमारा विश्वास और समर्पण ला सके।

हमारा जीवन यीशु में छिप जाना चाहिए, और उसकी योजनाएँ हमारी योजनाएँ होनी चाहिए। सच्चा समर्पण हमारे हाथ को "पीछे देखे" बिना हल पर रख रहा है (लूका 9:62)।

जब हम उस प्रकार का समर्पण करते हैं, यीशु हमारी पूरी सामर्थ को बढ़ाता है। जब हम उस पर समर्पित होते हैं, वह हमारी आत्मा पर संसार की पकड़ को तोड़ डालेगा। हमें वस्तु केंद्रित होने की बजाय मसीह केंद्रित होना चाहिए; केवल वही हमारे जीवन की रिक्तता को पूर्ण करेगा।

एक समय के विषय सोचें आपने भौतिक सम्पत्ति को अर्जित किया, जिसकी आपको वाकई जरूरत थी। इसके धुंधला होने से पहले कितने लम्बे समय तक खुशी और पूर्णता रही और फिर आप वापस शुरुआत में आ गये?

सोमवार **जनवरी 22**

वचन में

छः अरब से अधिक बाईबल पूरी दुनिया में बांटी जा चुकीं हैं, परन्तु कितने जीवित परमेश्वर के वचन के तौर पर परखे जाते हैं? कितने विश्वस्त हृदय से सत्य को जानने के लिये पढ़ते हैं?

सुचारू बाईबल अध्ययन हमारे आत्मिक दिशासूचक को निर्देशित करता है और भ्रम और झूठे संसार को दिशाज्ञान कराने में हमें सक्षम बनाता है। बाईबल ईश्वरीय मूल की एक जीवित दस्तावेज है (इब्रा० 4:12), और सच्चाई की ओर हमें ऐसा इंगित करती है जो हम अन्यत्र नहीं पाते। बाईबल प्रतिदिन के जीवन-यापन के लिये मसीह की मार्ग निर्देशिका है, और हमारी बुद्धि को विस्तार देने के द्वारा और हमारे चरित्र को विशुद्ध करने के द्वारा हमें यह शिक्षित करती है।

पढ़ें यूहन्ना 5:39, 14:6, और 20:31. बाईबल, खासकर सुसमाचार, हमें यीशु के विषय बहुत ही अधिकारिक जानकारी देती है। उसके विषय में यूहन्ना रचित सुसमाचार में यह खास अवतरण क्या कहते हैं और वह हमारे लिये क्यों इतना महत्त्वपूर्ण है, और वह सब जो हम विश्वास करते हैं?

_____

_____

हम बाईबल का अध्ययन करते हैं क्योंकि यह सच्चाई का सर्वश्रेष्ठ स्रोत है। यीशु सत्य है और हम बाईबल में यीशु को पाते हैं जैसा हम उसे जान सकते हैं जिस प्रकार वह हम पर वहाँ प्रकट हुआ है। पुराने और नये नियम में, परमेश्वर के वचन में हम सीखते हैं कि यीशु कौन है और उसने हमारे लिये क्या उपलब्धि हासिल की है। हम तब उससे प्रेम करने लगते हैं, और हमारे जीवनों को और आत्माओं को उसके अनंत सुरक्षा में समर्पित करते हैं। यीशु का अनुसरण और उसकी आज्ञाएँ मानने के द्वारा, जैसा उसके वचन में प्रकट किया गया है हम संसार के और पाप के बंधन से मुक्त हो सकते हैं। "सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे" (यूहन्ना 8:36)।

पढ़ें रोमियों 8:5-6, हम यहाँ पर किस विषय में सतर्क किये जा रहे हैं, और परमेश्वर के वचन का अध्ययन हमारे मनों पर इस संघर्ष में हमें किस प्रकार मदद कर सकता है?

संसार का प्रेम, खास कर सांसारिक वस्तुओं का प्रेम, हमें परमेश्वर से सहज खींच ले जा सकता है यदि हम सतर्क नहीं हैं। इसी कारण हमें स्वयं को वचन में स्थिर होना चाहिए, जो हमें अनंत और आत्मिक वास्तविकताओं की ओर संकेत करता है जो मसीही जीवन के लिये अति महत्त्वपूर्ण है।

सांसारिक चीजों का प्रेम आत्मिक नैतिकता के प्रति मन को कभी बुलंद नहीं करता; बल्कि यह बाईबलीय सिद्धान्तों का स्थान लोभ, स्वार्थ, एवं वासना के साथ ले लेता है। प्रेम जिस प्रकार बाईबल में दर्शाया गया है, स्वयं को दूसरों को देने की महत्ता हमें सिखाने के द्वारा संबंध को बनाता है। इसके विपरीत, समग्र रूप से सांसारिक चीजों को हमारे लिये प्राप्त करना है, जो सब कुछ यीशु प्रतिनिधित्व करता है के खिलाफ है।

मंगलवार **जनवरी 23**

प्रार्थना का जीवन

"और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने" (यूहन्ना 17:3)। इसमें संदेह नहीं कि मसीही अकसर कहते हैं कि उनका विश्वास परमेश्वर के साथ संबंध के विषय में है। यदि परमेश्वर को जानना "अनन्त जीवन है, तब हम उस जीवन को परमेश्वर के साथ एक संबंध के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। और निस्संदेह उस संबंध का केन्द्र सम्पर्क है। हमने कल देखा परमेश्वर अपने ईश्वरीय वचन के द्वारा हमसे संपर्क करता है। हम बदले में प्रार्थना के द्वारा उसके साथ बातचीत करते हैं।

यदि, जैसा हमने देखा है, हमें हमारे मनों और हृदयों को स्वर्गीय चीजों पर स्थिर करना है, जैसा इस संसार की चीजों के खिलाफ है, तब प्रार्थना आवश्यक हो जाती है। यही कारण है, इसके स्वभाव के द्वारा प्रार्थना स्वयं इस संसार की अपेक्षा हमें उच्चत्तर क्षेत्र (राज्य) की ओर संकेत करती है।

फिर भी हमें यहाँ पर सतर्क होने की आवश्यकता है क्योंकि बहुधा हमारी प्रार्थनाएँ मात्र हमारे स्वार्थी स्वभाव की अभिव्यक्ति हो जाती है। इसलिए हमें परमेश्वर की इच्छा की प्रस्तुति में प्रार्थना करने की जरूरत है।

वर्षों पूर्व, एक महिला ने ये एक गीत गया, "ओह, परमेश्वर क्या आप मेरे लिये एक मर्सिडीज बेंज नहीं खरीदेंगे?" यह उसके तरीके से उनके भौतिकवाद पर एक आक्रमण था जो परमेश्वर में विश्वास की वकालत

करते हैं। हमें भी आश्वस्त होने की जरूरत है जब हम प्रार्थना करते हैं जो स्वयं में परमेश्वर के प्रति समर्पित होने और संसार के प्रति मृत्यु की क्रिया है, जो हम परमेश्वर की इच्छा को ढूंढ़ रहे हैं, न कि हमारी।

पढ़ें इब्रानी 11: 1-6, कौन-सा निर्णायक घटक है जो हमारी सभी प्रार्थनाओं के साथ शामिल होना चाहिए? विश्वास के साथ परमेश्वर के पास आना और विश्वास से प्रार्थना करने का क्या तात्पर्य है?

_____

_____

यदि हमारी प्रार्थनाओं के साथ विश्वास संलग्न नहीं है, यहाँ एक परिकल्पना, शैतान का जालसाजी विश्वास होगा। "प्रार्थना और विश्वास निकटता से संबंध हैं, और उन्हें एक साथ अध्ययन करने की जरूरत है। विश्वास की प्रार्थना में ईश्वरीय विज्ञान है; यह एक विज्ञान है जिसे सब कोई जो एक सफलता को अपना जीवन कार्य बनाते हैं, समझना चाहिए। मसीह कहता है, 'जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा।' मरकुस 11: 24, वह इसे सहज बनाता है कि हमारा मांगना परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप होना चाहिए; हमें वे वस्तुएँ मांगनी चाहिए जो उसने हमें प्रतिज्ञा की है, और जो कुछ भी हम प्राप्त करते हैं उसकी इच्छानुसार करने में प्रयुक्त होनी चाहिए। शर्तें मिल गईं, प्रतिज्ञा सुस्पष्ट है।"- एलेन जी० ह्वाईट, प्रेयर, पेज 57.

आप स्वयं के प्रार्थना जीवन पर नज़र डालें आप किस चीज के लिये प्रार्थना करते हैं? आपकी प्राथमिकताओं के विषय में आपकी प्रार्थनाएँ क्या बतलाती हैं? कौन-सी दूसरी चीजों के लिये आपको प्रार्थना करने की आवश्यकता है?

बुधवार **जनवरी 24**

ज्ञान का जीवन

बाईबल में सुन्दरतम कहानियों में से एक सुलैमान का परमेश्वर को आग्रह करने की कहानी में पायी जाती है, सब चीजों से बढ़कर "अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये समझने की ऐसी शक्ति दे, कि मैं भले बुरे को परख सकूँ; क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके?" (1राजा 3: 9)।

परमेश्वर ने सुलैमान से कौन-से महत्त्वपूर्ण वचन कहे जो वह अगर ध्यान देता राजा को विनाश से बचा सकता, जो उसकी सम्पत्ति ने उसपर थोपी?

क्यों परमेश्वर ने जो उसे यहाँ पर कहा हम सबके लिये इतना महत्त्वपूर्ण है? 1राजा 3: 14; इसे भी देखें 1यूहन्ना 5: 3, 1पत० 4: 17.

_____

_____

_____

_____

सुलैमान के पास असाधारण ज्ञान था, परन्तु ज्ञान स्वयं में यदि उपयोग न किया जाये और न जीया जाये तो यह एक अच्छी सूचना के अलावे कुछ नहीं है। वचन के बाईबलीय अर्थ में, ज्ञान का उपयोग न किया जाये, तो सच्चा ज्ञान नहीं है। बहुत से खो जायेंगे जिनके पास परमेश्वर और उसकी माँगों के विषय में ढेर सारी सही जानकारी है। सुलैमान आज्ञाकारिता की कमी के कारण उस रास्ते से भटक गया जिसके लिये परमेश्वर ने उसे बुलाया था। जीवन में केवल बाद में वह सचमुच अपने होश में आया, नम्रता में लिखते हुए: "क्योंकि बुद्धि, मूंगे से भी अच्छी है, और सारी मनभावनी वस्तुओं में कोई भी उसके तुल्य नहीं है" (नीति व० 8: 11)।

ज्ञान जानकारी और समझ का इस्तेमाल है। जानकारी तथ्यों को पेश करती है; समझ विवेक को पेश करती है; और ज्ञान हमारे जीवन के प्रति हमारी जानकारी और समझ के प्रयोग की प्रक्रिया में आता है। एक बुद्धिमान भण्डारी को केवल जानकारी और समझ ही की जरूरत नहीं होती वरन अनुभव की भी जरूरत होती है जो उस जानकारी और समझ को जीने से आता है। सुलैमान का उदाहरण हमें दिखाता है कि कितनी सहजता से बुद्धिमान और समझ वाले लोग भी भौतिकवाद की जीवन शैली के खालीपन में बह सकते हैं यदि वह व्यक्ति उस जानकारी के अनुसार जीवन नहीं जीता जो उसे दी गई है।

1कुरि० 3: 19 और नीति व० 24: 13-14 को तुलना करें। इन अवतरणों में कहे गए दो प्रकार के ज्ञान के बीच क्या फर्क है? सब्त के दिन कक्षा में अपने जवाबों को साझा करें।

बृहस्पतिवार **जनवरी 25**

पवित्र आत्मा

महान् विवाद सत्य है; दो पक्ष हमारी आत्मा के लिये युद्ध कर रहे हैं। एक मसीह की ओर खींच रहा है (यूहन्ना 6: 44) और एक संसार की ओर (1यूहन्ना 2: 16), पवित्र आत्मा की शक्ति हमारे जीवनों में हमें सही दिशा की ओर ले जा सकता है यदि हम चाहें और उसके सुपुर्द करें।

"परन्तु जब वह अर्थात् सत्य की आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा" (यूहन्ना 16: 13; इसे भी देखें यूहन्ना 14: 16)। सिद्धान्त और विश्वास के द्वारा जीवन जीने के लिये पवित्र आत्मा हमें सामर्थ्य देता है, उमंग या भावना के द्वारा नहीं जो संसार पर इतना हावी होता है। स्वर्ग में जीने के लिये सफलतापूर्वक तैयारी पवित्र आत्मा की अगुवाई में इस संसार में विश्वस्त जीवन जीने से आती है।

पौलुस सलाह देता है: इसलिये कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर हो" (1कुरि० 2: 5)। बहुधा भौतिक वस्तुओं के द्वारा संसार की लालसा परमेश्वर से हमें वापस खींचती है। इसके विपरीत यदि हम प्रतिरोध नहीं करते, पवित्र आत्मा की शक्ति हमें यीशु की ओर खींच ले जाएगी।

संसार के साथ लड़ाई में सफलता और इसका प्रलोभन हमारे स्वयं के बाह्य ओर से ही प्राप्त किया जा सकता है। पढ़ें यहेज० 36: 26-27; यूहन्ना 14: 26; एवं इफि० 3: 16-17. जब हम पवित्र आत्मा को हमें ग्रहण करने को कहते हैं, आश्वस्त करने के लिये परमेश्वर कौन-सी चीजें करेगा कि हमने आत्मिक तौर पर विजय हासिल की है?

_____

_____

"यह झूठी परिकल्पना और परंपरा के द्वारा है जो शैतान मन के ऊपर अपनी शक्ति अर्जित कर लेता है। लोगों को झूठे आदर्शों की ओर निर्देशित करने के द्वारा वह चरित्र को विकृत कर देता है। पवित्र शास्त्र के द्वारा पवित्र आत्मा मन से बातें करता है, और सत्य को हृदय पर अंकित करता है। इस प्रकार वह गलतियों को प्रकट करता और आत्मा से निष्कासित करता है। यह सत्य की आत्मा के द्वारा है, जो परमेश्वर के वचन के मार्फत कार्य करता है, जिसे मसीह चुने हुए लोगों को स्वयं नियंत्रित करता है।"- एलेन जी० ह्वाईट, द डिजायर ऑफ एजेस, पेज 671.

पवित्र आत्मा सत्य का रिपोर्टर (संवाददाता) है और शानदार उपहार है जिसे यीशु ने अपने स्वर्गारोहण के बाद पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रतिनिधि स्वरूप दिया। पवित्र आत्मा संसार के प्रलोभन को और इसके "आकर्षण" को परास्त करने के लिये हमें शक्ति देने के लिये प्रयत्नशील है।

संसार हमें खींचता है, है न? अभी आप कौन-से चुनाव कर सकते हैं, जो आपको पवित्र आत्मा के प्रति समर्पण करने हेतु मदद कर सकता है, आपको संसार के प्रलोभनों को प्रतिरोध करने की शक्ति केवल कौन दे सकता है?

अतिरिक्त अध्ययन: एक भण्डारी कर्त्तव्य और प्रेम के दो सिद्धान्तों पर कार्य करता है। "याद रखें कि कर्त्तव्य की एक जुड़वा बहन प्रेम है; ये एकजुट लगभग सभी चीजों को प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु अलग होकर कोई भी भलाई के लायक नहीं।"- एलेन जी० व्हाईट, टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 4, पेज 62. कर्त्तव्य कार्य रूप में प्रेम है। हमें केवल मसीह के बलिदान को प्रेम के खातिर हमारे कर्त्तव्य को जगाने के लिये सोचने की जरूरत है।

विपरीतार्थ हैं संसार के सिद्धांत: घृणा और इसकी जुड़वाँ, बगावत। बगावत कार्य रूप में घृणा हो सकती है। लुसीफर ने परमेश्वर के विरुद्ध बगावत की (यहेज० 28: 16-17) और जब तक वह नाश नहीं होता है ऐसा करना कभी नहीं छोड़ेगा। उसने प्रेम के अधिकार को अधिकार का प्रेम में बदल डाला। इस्राएल के धार्मिक अगुओं ने अधिकार और शक्ति जो यीशु के पास थी उससे घृणा करते थे (मत्ती 22: 29)। यहाँ तक कि वे मन्दिर तक दौड़े चले, या उसकी पैनी नजर से हटे, उन्होंने अपने तौर तरीके नहीं बदले।

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न:

1. प्रेम और कर्त्तव्य के सिद्धांत पर चिंतन करें। एलेन जी० व्हाईट का क्या तात्पर्य है जब, उन्हें जुड़वा कहने के बाद, वह कहती है कि एक दूसरे के बिना "भलाई के लायक नहीं"? कर्त्तव्य के बिना प्रेम किसके समान दिखता है, और प्रेम के बिना कर्त्तव्य किसके समान दिखता है? उन्हें एक साथ क्यों होना चाहिए?
2. इस सप्ताह का याद वचन ऐसा है: "कोप के दिन धन से तो कुछ लाभ नहीं होता, परन्तु धर्म मृत्यु से भी बचाता है... जो अपने धन पर भरोसा रखता है वह गिर जाता है, परन्तु धर्मी लोग नये पत्ते के समान लहलहाते हैं" (नीति व० 11: 4, 28)। इस अवतरण का क्या अर्थ है? यह धनवानों के लिये क्या कह रहा है और क्या नहीं कह रहा है?
3. कक्षा में सुलैमान के जीवन पर चर्चा करें। पूछें किस प्रकार वह राह से इतनी दूर भटक सकता था। अवतरणों के लिये सभोपदेशक की किताब को देखें जो सांसारिक वस्तुओं के खालीपन और निरर्थकता को दर्शाती है, जौभी कि उनमें से बहुत कुछ सुलैमान के समान हमारे पास भी है। हमने इस सप्ताह प्रार्थना, बाईबल अध्ययन, और मसीह के साथ संबंध के विषय में क्या सीखा है जो आत्मिक रूप से हमें सही रास्ते पर रख सकता है?
4. किस प्रकार लोगों के पास सांसारिक वस्तुओं की बहुलता नहीं होने पर भी शैतान ने जो जाल बिछाया है फंस जाते हैं?
5. विभिन्न प्रकार के ज्ञान के विषय में बुधवार के अंतिम प्रश्न के संबंध में आपने किस जवाब को जुटाया?